शोध-चिंतन पत्रिका: सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित ई शोध पत्रिका
अंक:3; जुलाई-दिसंबर, 2021; पृष्ठ संख्या: 12-22

हिंदी साहित्य में पूर्वोत्तर भारत: मणिपुर के विशेष संदर्भ में

✍ प्रो. यशवंत सिंह

शोध-सार :

हिन्दी का साहित्य अति समृद्ध है और इस साहित्य ने देश के साथ-साथ विदेशों के सैकड़ों घटनाओं-प्रसंगों को अपने विषय के रूप में ग्रहण किया है। हिन्दी साहित्य की इस व्यापकता में पूर्वोत्तर भारत को उतना महत्व नहीं मिला, जितना मिल सकता था। पूर्वोत्तर के असम पर आधारित रचनाएँ कुछ अधिक मिलती हैं। इस क्षत्र के दूसरे राज्यों की तरह मणिपुर पर भी साहित्यकारों की दृष्टि कम पड़ी है। अज्ञेय, देवेन्द्र सत्यार्थी, श्री प्रकाश मिश्र, विष्णुचंद्र शर्मा, श्रीधर पाण्डेय, रीतामणि वैश्य आदि ने पूर्वोत्तर भारत पर हिन्दी में रचनाएँ की हैं।

बीज शब्द : *हिन्दी साहित्य, पूर्वोत्तर भारत, मणिपुर।*

प्रस्तावना :

हिंदी साहित्य की शुरुआत पूर्वोत्तर भारत के असम प्रदेश से हुई, जहाँ पर सिद्ध-साधकों ने तंत्र- मंत्र प्रधान साधना का प्रचार-प्रसार साहित्य के माध्यम से किया। फिर भी पूरे मध्यकालीन हिंदी साहित्य में पूर्वोत्तर भारत की उपस्थिति नगण्य रही। आधुनिक भारतीय साहित्य में भी पूर्वोत्तर के प्रसंग बहुत कम मिलते हैं। भौगोलिक एवं प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर पूर्वोत्तर भारत हिन्दी साहित्य में भी उपेक्षित ही रहा। अज्ञेय ने इस मनोरम क्षेत्र पर कई अमर रचनाएँ लिखी। वर्तमान समय में पूर्वोत्तर पर आधारित रचनाएँ होने लगी हैं। इनमें से कुछ रचनाएँ मणिपुर पर आधारित हैं।

विश्लेषण:

आधुनिक काल में अज्ञेय जी ने संभवतः पहली बार पूर्वोत्तर भारत को केंद्र में रखते हुए अनेक कविताएँ, कहानियाँ और यात्रा-वृतांत रचे। उनकी 'पावस प्रात, शिलांग' और

'दुर्वांचल' कविताएँ मेघालय के रमणीय सौन्दर्य को उजागर करती हैं-

पार्श्व गिरि का नम्र, चीड़ों में
डगर चढ़ती उमंगों-सी।
बिछी पैरों में नदी, ज्यों दर्द की रेखा।
विहग- शिशु मौन नीड़ों में, मैंने आँख भर देखा।
दिया मन को दिलासा - पुन: आऊँगा
भले ही बरस -दिन- अनगिन युगों के बाद !
क्षितिज ने पलक- सी खोली, तमक कर दामिनी बोली :
'अरे,यायावर ! रहेगा याद ?

(श्रीवास्तव, संपा 2003:08)

अज्ञेय की 'जयदोल', 'नीली हंसी', 'हिली बोन की बत्तखें', 'मेजर चौधरी की बापसी' और 'नगा पर्वत की घटना' आदि कहानियाँ पूर्वोत्तर भारत के समाज को केंद्र में रखकर रची गयी हैं। मेघालय की खासिया जनजाति की एक जवां युवती को केंद्र में रखकर रची गयी 'हिली बोन की बत्तखें' कहानी अपनी संवेदनशीलता तथा मार्मिकता के कारण विशेष रूप से हमारा ध्यान आकर्षित करती है। कहानी की नायिका हीली बोन यिर्वा 31-32 वर्ष की अविवाहित युवती है और अच्छी-अच्छी बत्तखें पालती है, जिन पर उसे गर्व है तथा जो उसकी जीविका का प्रमुख साधन हैं। लेकिन रात्रि के समय लोमड़ी आकर एक-दो बत्तखों को चट कर जाती है, जिस पर वह दुखी होती है। इसी समय फौज से छुट्टियों पर लौटे आगंतुक कैप्टन दयाल वहाँ पर उपस्थित होते हैं तथा रात्रि के समय डाकू लोमड़ी को मार देने का प्रस्ताव रखते हैं। हीली बोन थोड़ी झिझक के साथ प्रस्ताव तो स्वीकार कर लेती है लेकिन आगंतुक द्वारा नर लोमड़ी को बंदूक की गोली से घायल कर देने के पश्चात् वह मादा लोमड़ी व उसके छोटे-छोटे बच्चों को बिलबिलाते देखकर व्यथित हो जाती है तथा अपनी सारी बत्तखों की गर्दन डाओ से काटकर उनका वध कर देती है। दर-असल मृत नर लोमड़ी के परिवार को इस अवस्था में देखकर उसे वैधव्य की मार्मिक अनुभूति होती है तथा इसीलिए वह उसके कारण रूपी अपनी प्यारी बत्तखों के वध करने का कठोर निर्णय ले लेती है।

अज्ञेय ने अपने पहले यात्रा-वृतांत 'अरे यायावर रहेगा याद' (1953) में भी पूर्वोत्तर

भारत से संबन्धित तीन यात्रा-संस्मरण लिखे हैं; जिनमें से एक असम के सांस्कृतिक केंद्र 'माजुली' पर है, जिसके प्राकृतिक सौन्दर्य पर अज्ञेय का कवि मन मोहित है; साथ ही, वहाँ के लोगों के रीति-रिवाज, वहाँ की प्रकृति, जंगली जानवर सब मन को बहुत आकर्षित करनेवाले हैं। लेखक असम के लोगों की मानसिकता और उनके स्वभाव के बारे लिखते हैं-

> असमीया लोग खूब हँसते हैं, बाधाओं पर और भी अधिक हँसते हैं। इसलिए कि वे बाधा को बाधा मानते ही नहीं। वह तो केवल काम न करने की युक्ति है और काम न करना पड़े तो क्यों न हँसा जाये।
>
> (पालीवाल, संपा 2011:87)

पूर्वोत्तर भारत पर केन्द्रित यात्रा-संस्मरण लेखन की दृष्टि से सांवरमल सांगानेरिया द्वारा रचित 'ब्रह्मपुत्र के किनारे किनारे'(2006), 'अरुणोदय की धरती पर'(2008) और 'लोहित के मानसपुत्र: शंकरदेव'(2010) यात्रा-वृतांत भी उल्लेखनीय हैं, जो असम तथा अरुणाचल प्रदेश की पृष्ठभूमि पर लिखे गये हैं।

पूर्वोत्तर भारत को केंद्र में रखते हुए हिंदी साहित्य में कुछ उपन्यास प्रकाशित हुए, जिसमें पहला और महत्वपूर्ण प्रयास लोकगीतों के संग्रहकर्ता देवेंद्र सत्यार्थी का है, जिन्होंने 'ब्रह्मपुत्र'(1956) उपन्यास के माध्यम से असम प्रदेश के जनजीवन, रहन-सहन, तीज-त्योहार इत्यादि सांस्कृतिक गतिविधियों पर विस्तार से प्रकाश डाला है। शुरू में उपन्यास 'दिसांग-मुख' के लोगों के जनजीवन का मंथर गति से चित्रण करता है। यहाँ के निवासियों के मानसिक निर्माण में ब्रह्मपुत्र नदी का निर्णायक योगदान रहा है। पूर्वपीठिका में ही इस मानस को पहचानने के क्रम में लेखक कहते हैं-

> असमीया यथासंभव मर्यादा को नहीं छोड़ता है पर यदि कहीं उसके आत्मसम्मान को ठेस लगा दी तो बाढ़ के समय का ब्रह्मपुत्र बन जाता है। आतिथ्य में उसका जवाब नहीं। आज काम चल रहा है तो कल की चिंता क्यों की जाय और आने वाली विपत्ति आयेगी तो देख लेंगे।
>
> (सत्यार्थी 1956:12-13)

श्रीप्रकाश मिश्र द्वारा पूर्वोत्तर-प्रवास के दौरान प्राप्त अनुभवों के आधार पर लिखे गये

दो उपन्यास- 'जहाँ बाँस फूलते हैं'(1997ई.) और 'रूपतिल्ली की कथा'(2006) इस दृष्टि से विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं जो क्रमशः मिजोरम तथा मेघालय की पृष्ठभूमि को लेकर रचे गये हैं। इनमें से 'जहाँ बाँस फूलते हैं' उपन्यास में पूर्वोत्तर भारत के मिजोरम राज्य में पूर्व से ही व्याप्त असंतोष, विक्षोभ व विद्रोह के कारणों को लेखक ने पूरी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के आधार पर देखने-समझने का सार्थक प्रयास किया है। उपन्यासकार श्रीप्रकाश मिश्र भारत सरकार के खुफिया विभाग में कार्यरत अफसर थे। जब मिजोरम में विद्रोह चल रहा था तब 1976 ई. के आसपास भारत सरकार ने मिजोरम में उनकी तैनाती की थी, ताकि वे मिजों नेताओं से सरकार की बातचीत करा सके। वे दस साल से ज्यादा समय तक मिजों लोगों के बीच रहे तथा इस दौरान प्राप्त अपने से जीवंत अनुभवों को उन्होंने पूरी शिद्दत के साथ इस उपन्यास में पिरोया है। उपन्यास के शीर्षक के लिए लेखक ने मिजोरम में प्रचलित विइटम नामक जनश्रुति का सहारा लिया है, जिसके अनुसार - "मिजोरम में हर पचास साल की आवृत्ति पर वहाँ के बाँस फूलते हैं। उनके बीजों को खा-खाकर चूहे की विशेष प्रजाति अधिक बच्चे पैदा करती हैं, जो फसल खा जाते हैं, जिससे मिजोरम में अकाल पड़ जाता है। ऐसा ही अकाल मिजोरम में सन 1958 में पड़ा था, जिसके परिणाम स्वरूप 1966 का विद्रोह हुआ। इसकी परिणति मिजो नेता पु. लालदेवा और भारतीय प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी के मध्य सम्पन्न हुए ऐतिहासिक समझौते से हुई।

श्रीप्रकाश मिश्र का दूसरा उल्लेखनीय उपन्यास 'रूपतिल्ली की कथा' 19 वीं सदी में सांस्कृतिक संक्रमण के दौर से गुजर रहे मेघालय में बसने वाली खासी जनजाति के सामाजिक जीवन पर आधारित है। इस कालखण्ड में जहाँ एक तरफ अंग्रेज अपना वर्चस्व बढ़ाते हुए इस जनजाति के लोगों को ईसाई बनाने में लगे हुए थे, वहीं दूसरी ओर समीपवर्ती हिंदू नेतृत्व उन्हें हिंदू बनाने में संलग्न था। जबकि इस जनजाति के लोग दोनों से बचकर अपनी स्वतंत्र पहचान बनाये रखना चाह रहे थे। दरअसल उपन्यास का शीर्षक खासी जनजाति की मिथकीय चेतना

का परिचायक है, जो उनको गहरा आत्मविश्वास प्रदान करता है तथा विपरीत परिस्थितियों में भी उन्हें संघर्ष जारी रखने के लिए प्रेरित करता है। अंग्रेजी सेना से संघर्ष के दौरान लोगों में यह विश्वास और गहरे से पैठता है कि जब तक रूप तिल्ली पहाड़ी की चोटी पर डिडीयेई का वृक्ष खड़ा रहेगा और उसके साये में इन विचरती रहेगी तब तक यह इलाका अंग्रेजों का गुलाम नहीं होगा। लोगों के इसी विश्वास को तोड़ने के लिए अंग्रेज़ नवधर्मांतरित ईसाइयों के माध्यम से इस जादुई पेड़ को कटवा देते हैं, जिससे जनजाति के लोग हतोत्साहित हो जाते हैं तथा यहाँ अंग्रेज व ईसाइयत को विजय प्राप्त हो जाती है। इस तरह अपने पहले उपन्यास में लेखक ने जहाँ पूर्वोत्तर भारत में व्याप्त विद्रोह की समस्या के कारणों का विश्लेषण किया है वहीं दूसरे उपन्यास में उन्होंने जनजातियों में धर्मांतरण की समस्या तथा अपनी निजी पहचान को बचाये रखने के लिए किये जाने वाले संघर्ष को अभिव्यक्ति प्रदान की है।

इसी क्रम में 'नाइन हिल्स व वैली' के नाम से विख्यात अर्थात् नौ पर्वतमालाओं से घिरी मणिपुरी घाटी के प्रदेश को केन्द्र में रखकर लिखे गये दो उपन्यास 'उत्तर-पूर्व' (2002), लेखक- लालबहादुर वर्मा तथा 'आहुति' (2004), लेखक - श्रीधर पाण्डेय विशेष महत्वपूर्ण हैं। लेखकद्वय ने मणिपुर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध रहकर, वहाँ से प्राप्त अनुभवों के आधार पर इन उपन्यासों को रचा है। इनमें से पहला उपन्यास 'उत्तर-पूर्व' शाब्दिक अर्थ में भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र को द्योतित करता है, लेकिन इस संदर्भ में विष्णुचंद्र शर्मा ने उचित ही लिखा है-

> 'उत्तर-पूर्व' उपन्यास का नाम प्रतीकात्मक है और उसके दो अर्थ निकाले जा सकते हैं। एक है नार्थ-ईस्ट के संदर्भ में, दूसरा है जवाब मिलने से पहले सवालों के उमड़ने-घुमड़ने और टकराने का मंथन। इसमें जवाब न मिलने की पीड़ा भी है और उसे ढूंढने का रचनात्मक रोमांस भी।
>
> (वर्मा 2002:07)

ओजा वर्मन नामक पात्र के माध्यम से आत्मवाची शैली में रचा गया यह उपन्यास मणिपुरी समाज में व्याप्त असंतोष को हमारे

सामने प्रस्तुत करता है। जिसकी शुरुआत 1949 ईसवी से हुई जब मणिपुर प्रदेश का जबरन भारतीय संघ में विलय सम्पन्न हुआ। सीमावर्ती संवेदनशील क्षेत्र होने के कारण यहाँ पर फौजों का जमावड़ा बना रहा तथा उन्हें आर्म्स एक्ट जैसे असीमित अधिकार दिये गये। लेखक के अनुसार मणिपुर में जितने वयस्क पुरुष हैं उतने ही रंग-बिरंगे फौजी लगाने की क्या जरूरत है? क्यों इम्फाल के बीच में स्थित पारम्परिक राजधानी कांगला में दौड़ती फौजी गाड़ियां उनका सीना रौंदती लगती हैं?

उपन्यास में इबोहल नामक छात्र फौज की संवेदनहीनता का उस समय शिकार होता है, जिस समय वह मणिपुर विश्वविद्यालय में एम. ए. राजनीतिशास्त्र की परीक्षा में शामिल होने जा रहा था। विश्वविद्यालय के गेट पर तलाशी के नाम पर उसे पकड़ लिया जाता है तथा परीक्षा के लिए तैयार संक्षिप्त नोट्स को संदिग्ध मानकर उसे चार दिन हवालात में बंद करके प्रताड़ित किया जाता है। कुछ न हासिल कर पाने पर बगैर किसी क्षमा-याचना के उसे छोड़ दिया जाता है। लेकिन इबोहल का इससे भविष्य ही खराब हो जाता है, उसे विक्षिप्तावस्था में विश्वविद्यालय के उसके विभाग व परीक्षा विभाग के इर्द-गिर्द सुबह से शाम तक चक्कर लगाते देखा जाता है। इससे मणिपुरी लोगों में फौजियों के प्रति नफरत की भावना पनपती है; युवाओं में अलगाववादी प्रवृत्तियाँ जन्म लेती हैं तथा वे भूमिगत संगठनों में शामिल होने को प्रेरित होते हैं। उपन्यास का इराबो नामक बुद्धिजीवी पात्र इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है, जो अपनी उच्च शिक्षा के लिए भारत की राजधानी नई दिल्ली पहुंचता है, जहाँ पर उसमें मणिपुर के नायकों पर फ़िल्म बनाने का विचार पनपता है। लेकिन छुट्टियों के समय मणिपुर आने पर रात्रि के अंधकार में फौजी उसे घर से उठा ले जाते हैं। घोर प्रताड़ना के बाद छूटने पर वह भूमिगत संगठन में शामिल हो जाता है तथा संगठन में शामिल युवाओं को मानसिक रूप से प्रशिक्षित करता है। संयोगवश भूमिगत संगठन में उसकी वापसी होती है लेकिन उस मनोदशा से वह उबर नहीं पाता तथा अंतर्मुखी जीवन व्यतीत करता है। दरअसल मणिपुर की बहुत सारी समस्याएँ राजनीतिक अधिक हैं, जिनका निराकरण संवेदनशील बातचीत तथा उदारहृदय युक्त

समझौते से ही संभव है। यदि हम बलपूर्वक फौज द्वारा उनसे निपटना चाहेंगे तो स्थितियाँ और भी बिगड़ने लगती हैं। इस उपन्यास के माध्यम से लेखक एक ऐसे सेतु के निर्माण की कामना करते हैं जिससे सभी जुड़ सकते हैं। लेखक के अनुसार पिछले चालीस वर्षों में फौजी गाड़ियों और व्यापारी ट्रकों के लिए भले ही पुल बन गये हों, लेकिन व्यक्तियों, घरों, परिवारों को जोड़ने वाले पुल नहीं बने, न बनाने के प्रयास हो रहे है'। इस तरह बहुत सारे अनुत्तरित सवालों के साथ उपन्यास का समापन हो जाता है।

श्रीधर पाण्डेय द्वारा रचित 'आहुति' उपन्यास का कथानक मुख्य रूप से भारत के पूर्व की सीमा से 40 कि.मी. दूर स्थित उग्रवादी हिंसा तथा राजनीतिक अस्थिरता से ग्रसित मणिपुर की राजधानी इम्फाल शहर पर केन्द्रित है। लेखक के अनुसार-

> मणिपुर का सांस्कृतिक इतिहास सैकड़ों वर्ष पुराना है। हिमालय की पर्वत-श्रृंखलाओं में उत्तर-पूर्व के इस क्षेत्र में दुर्गम पहाड़ों को पारकर लोग पहुंचे होंगे। घाटी के चारों ओर पहाड़ों पर रहने वाली जन- जातियाँ सभ्यता के विकास में घाटी-निवासी मैतेयी लोगों से हजारों वर्ष पीछे रह गईं। जबकि घाटी के निवासियों ने कृषि का ज्ञान प्राप्त कर लिया और कृषि पर आधारित उनका समाज 15 वीं सदी में ही राजतंत्र की स्थापना कर चुका था।
>
> (पांडेय 2008:97)

कथा में एक मध्यवर्गीय मैतेयी परिवार की लड़की कन्नुप्रिया चानु का संपर्क एक हिंदी-भाषी बिहार प्रदेश के नवयुवक मनोज से होता है। मनोज एक किसान परिवार का बेटा है। स्वतंत्रता के चालीस वर्षों के बाद भी उत्तर भारत के ग्रामीण जीवन में बढ़ती आर्थिक निर्धनता के बीच बेकारी के देश से पीड़ित मनोज अपना गाँव छोड़ने को बाध्य होता है। गाँव और प्रदेश से हजारों कोस दूर मणिपुर में मनोज को शिक्षक की नौकरी मिल जाती है। साथ ही मनोज के संपर्क से चानु की मणिपुर में हिन्दी की शिक्षा पूरी होती है तथा वह मनोज के प्रोत्साहन पर उच्चशिक्षा प्राप्त करने हेतु काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रवेश लेती है। चानु की निकटता से मनोज को मणिपुर की पारिवारिक व सामाजिक व्यवस्था को जानने-

समझने का अवसर प्राप्त हुआ तथा चानु के युवावस्था प्राप्त करते-करते यह निकटता प्रेम का धारण कर लेती है।

चानु जब बनारस से वापस मणिपुर आती है तो उसके रसूखदार चचेरे भाई उस पर किसी मैतेयी व्यक्ति से ही शादी करने का दबाव बनाते हैं। लेकिन चानु इस दबाव को अस्वीकार कर मयांग मनोज के साथ शादी के बंधन में बंधने का साहस-भरा निर्णय लेती है। मनोज अपने सहकर्मी शिक्षक की सहायता से चानु को मोइराङ भगाकर ले जाता है, जहाँ दोनों शादी के बंधन में बंध जाते हैं। इसे चानु के चचेरे भाई बर्दाश्त नहीं कर पाते। शादी सम्पन्न होने के बाद जब वर- वधू पहली रात एक झोपड़ी में बिता रहे थे तभी काले लिबास में कुछ छाया-सी दिखलाई पड़ती है। आसन्न खतरे को भांपकर चानु झट से चित्त लेटे मनोज के शरीर के ऊपर अपने को डाल देती है। चिंगारी के साथ तड़तड़ की आवाज में गोलियां छूटती हैं तथा प्रेम की बलि-वेदी पर चानु अपने जीवन की आहुति देकर मनोज के प्राण बचा लेती है। उपन्यासकार आशाभरे शब्दों- "चानु का बलिदान घृणा और हिंसा को मिटाकर रहेगा, हमें उसका संदेश देश के कोने-कोने में ले जाना है"(पांडेय 2008:143) के साथ उपन्यास का अंत करते हैं।

अभी हाल ही में गौहाटी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में सहआचार्या के रूप में कार्यरत डॉ. रीतामणि वैश्य की मणिपुर पर केन्द्रित कहानी 'लोकटाक कब तक' पढ़ने को मिली; जिसमें लेखिका ने मणिपुर की यात्रा के अपने अनुभवों को बड़ी ही संजीदगी के साथ एकसूत्र में पिरोया है और मणिपुर में व्याप्त आतंकवाद की समस्या को मानवीय संवेदना के साथ जोड़ा है। इस कहानी का घटनाक्रम तीन प्रमुख पात्रों - नायिका जेरू, उसके बचपन का साथी दया और भूमिगत कनखाम्बकी पर केन्द्रित है। जेरू पुलिस अधिकारी की बेटी है, बचपन का साथी दया उससे तीन साल बड़ा है। जेरू और दया का साथ उनके युवावस्था प्राप्त होते-होते प्रेम- प्यार में तब्दील होने लगता है। दोनों मणिपुर की पारम्परिक पद्धति के अनुरूप घर से भाग आने का निर्णय लेते हैं। दो दिन किसी अज्ञात होटल में बिताकर तीसरे दिन वे मणिपुर की सुप्रसिद्ध झील लोकटाक का सौंदर्य

निहारने जा पहुंचते हैं। लेकिन शाम को घर वापस लौटते समय रास्ते में जेरू का अपहरण हो जाता है। जेरू की मुक्ति हेतु उसके पुलिस अधिकारी पिता से भूमिगत संगठन के लोग अपने कुछ साथियों को छोड़ने की शर्त रखते हैं। इधर जेरू को लोकटाक-स्थित एक तैरती झोपड़ी में कैद करके रखा जाता है, जिसकी निगरानी एक भूमिगत युवक करता है। जेरू पहले तो भूमिगत युवक से घृणा करती है तथा उसे लोकटाक झील, जो यहाँ के लोगों की जीविका का प्रमुख आधार है, उसको बरबाद करने के लिए उत्तरदायी ठहराती है। लेकिन धीरे-धीरे भूमिगत युवक के मध्य मानवीय संवेदनाएँ पनपती हैं। जेरू का पुलिस अधिकारी पिता भूमिगत संगठन के सदस्यों की शर्तें नहीं मानता, फलत: ऊपर से जेरू को मार डालने का आदेश आता है। लेकिन भूमिगत युवक जेरू को मार डालने की बजाय उसे वहाँ से भाग जाने के लिए उकसाता है। जेरू ऐसा करने में सफल होकर अपने पिता के घर पहुंचती है। जेरू की सकुशल वापसी पर उसका होने वाला पति दया उससे डॉक्टरी परीक्षण करवाने की बात करता है। जेरू बचपन से जानने वाले पुरुष साथी का यह रूप देखकर दंग रह जाती है तथा उसके मुख से हठात् 'ना' निकलता है। अगले दिन जब जेरू अखबार पढ़ रही होती है, तो उसकी नजर लोकटाक में मारे गये भूमिगत युवक के चित्र पर पड़ती है। 'भूमिगत सदस्यों की आपसी मुठभेड़ में वह युवक मारा गया था तथा उस पर पुलिस अफसर की बेटी को छुड़ाने का आरोप था। वह इंजीनियरिंग का छात्र था तथा चार साल पहले भूमिगत संगठन में भर्ती हुआ था। समाचार पढ़कर जेरू रोने लगती है, माँ के पूछने पर वह कहती है- "मुझे पता नहीं चला, जिंदगी का नाटक वह अकेले ही खेल गया।"(साहित्य यात्रा पत्रिका 2018:54)

अंत में 'इक्कीसवीं शती का मणिपुर' नामक कविता का उल्लेख करते हुए आलेख समाप्त करना चाहूँगा, जिसमें विकास की अंधी दौड़ के चलते बहुत कुछ पीछे छूट जाने का दर्द-कसक समाहित है -

"लोक्टाक" पट जाएगी बैंक- नोटों से,
हालीवुड- बस्तियाँ बसेंगी खेतों में।

मोइराङ की मोरियाँ बनेंगी 'मरिन ड्राइव',
हाथ में हाथ डाले घूमेंगे 'रेबेका- क्लाइव'।
जेब तो भरी रहेगी, पै दिल होगा खाली,
कहाँ मिलेगी याओशङ्" पे पैसा पीरो वाली।

कहाँ छमक के थिरकेगा यह थाबलचोडबा,
स्थान हो जाएंगे 'शोइबुम ङारी" औ 'इरोनबा'।
यार! 'बोड़ साहब' तो तुम बन जाओगे, पै एड़ी तक बाल छहराने वाली सनातोम्बी कहाँ से पाओगे।

(सिंह 1990)

ग्रंथ-सूची:

अज्ञेय.अरे यायावर रहेगा याद.नई दिल्ली:राजकमल प्रकाशन, 2015.

गीतांजलि.संपा.अज्ञेय कहानी संचयन.नई दिल्ली:राजकमल प्रकाशन, 2012.

देवराज.संपा.फागुन की धूल.इम्फाल:काङजम एंटरप्राइजेज, 1990.

पांडेय, श्रीधर.आहुति.प्रथम.पटना:जानकी प्रकाशन, 2008.

पालीवाल, रीतारानी, संपा.अज्ञेय और पूर्वोत्तर भारत.नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2011.

मिश्र, श्रीप्रकाश.जहाँ बाँस फूलते हैं.दिल्ली:यश पब्लिकेशस, 2011.

मिश्र, श्रीप्रकाश.रूपतिल्ली की कथा.इलाहाबाद:लोकभारती प्रकाशन, 2006.

मिश्र, विद्यानिवास और रमेशचंद्र शाह.अज्ञेय काव्य स्तबक.नई दिल्ली:साहित्य अकादमी, 2010.

वर्मा, लालबहादुर.उत्तर-पूर्व.इलाहाबाद:इतिहासबोध प्रकाशन, 2002.

शर्मा, विष्णुचंद्र.आर्थकल्प.इलाहाबाद:इतिहासबोध प्रकाशन, 2004.

श्रीवास्तव, परमानंद और विश्वनाथ तिवारी, संपा.दिशांतर.वाराणसी:अनुराग प्रकाशन, 2003.

सत्यार्थी, देवेंद्र.ब्रह्मपुत्र.नई दिल्ली:एशिया प्रकाशन, 1956.

सिंह, किसुन.इक्कीसवीं शती का मणिपुर.इम्फाल:काङजम एंटरप्राइजेज, 1990.

पत्रिका:

वैश्य, रीतामणि."लोकटाक कबतक." *स्नेहिल*.2018:22-29.प्रिंट.

साहित्य यात्रा पत्रिका, वर्ष: 4, अंक: 16, अक्टूबर-दिसंबर, 2018.

संपर्क-सूत्र:
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
मणिपुर विश्वविद्यालय, इम्फ़ाल